NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 5-03-2025

विषय सूची

भारत के समावेशी विकास में महिलाओं की भूमिका

उच्चतम न्यायालय ने न्यायाधिकरणों को मजबूत बनाने का आह्वान किया

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) की सफलता

भारत का कृषि निर्यात

IMF ने NBFC से जुड़ी चिंताएँ व्यक्त की

भारत का AI सुरक्षा संस्थान डिजाइन करना

संक्षिप्त समाचार

अरबी गोंद (बबूल गम)

वालेस लाइन

थोरियम भंडार

रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (RERA)

भारत में अनुसंधान एवं विकास पर व्यय में वृद्धि

सौर अधिकतम

अपतटीय खनन

वनतारा(Vantara)

भारत के समावेशी विकास में महिलाओं की भूमिका

संदर्भ

- हाल ही में नीति आयोग ने "उधारकर्त्ताओं से बिल्डरों तक: भारत की वित्तीय विकास कहानी में महिलाओं की भूमिका" शीर्षक से रिपोर्ट प्रस्तुत किया।
  - रिपोर्ट भारत के आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महिला उद्यमियों की भूमिका पर प्रकाश डालती है।

मुख्य निष्कर्ष

- **महिला उधारकर्त्ताओं में लगातार वृद्धि:** 2019 और 2024 के बीच ऋण चाहने वाली महिलाओं की संख्या तीन गुना बढ़ गई, जो महिला उधारकर्त्ताओं के बीच बढ़ती माँग को दर्शाता है।
- **महिला उधारकर्त्ता जनसांख्यिकी:** ऋण लेने वाली लगभग 60% महिला उधारकर्त्ता अर्ध-शहरी या ग्रामीण क्षेत्रों से हैं।
  - 30 वर्ष से कम आयु की महिलाओं द्वारा खुदरा ऋण लेने में केवल 27% की हिस्सेदारी है, जबकि पुरुषों के लिए यह 40% है।
- **ऋण आपूर्ति प्रवृत्ति:** हाल के वर्षों में ऋण उत्पत्ति में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2019 से, व्यवसाय ऋण और स्वर्ण ऋण में महिलाओं की हिस्सेदारी क्रमशः 14% और 6% बढ़ी है।
  - 2024 तक, महिलाओं द्वारा लिए गए 42% ऋण व्यक्तिगत वित्त के लिए थे, जो 2019 में 39% से थोड़ी वृद्धि है।
  - महिलाओं द्वारा लिए गए अधिकांश ऋण स्वर्ण के बदले लिए गए हैं - 2024 में महिलाओं द्वारा लिए गए सभी ऋणों में से 36% स्वर्ण से संबंधित ऋण थे, जबकि 2019 में लिए गए ऋणों का 19% था।
- **क्रेडिट मॉनिटरिंग और जागरूकता में वृद्धि:** दिसंबर 2024 तक, भारत में 27 मिलियन महिला उधारकर्त्ताओं ने अपनी क्रेडिट सूचना रिपोर्ट और CIBIL के साथ स्कोर की निगरानी की है।

महत्त्व

- **आर्थिक विकास:** भारत की जनसंख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग आधी है, लेकिन सकल घरेलू उत्पाद में उनका योगदान केवल 18% है।
  - IMF के अनुमान के अनुसार, महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने से भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27% की वृद्धि हो सकती है।
- **रोजगार सृजन:** महिलाओं के स्वामित्व वाले MSMEs स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और कौशल विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **सामाजिक सशक्तीकरण:** यह उद्यमों का सफलतापूर्वक नेतृत्व और प्रबंधन करने की महिलाओं की क्षमता को प्रदर्शित करके लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।

सरकारी पहल

- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने 9 मिलियन महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को औपचारिक बैंकिंग तक पहुँच के माध्यम से अपनी आजीविका में सुधार करने में सक्षम बनाया है।
- नीति आयोग का महिला उद्यमिता मंच (WEP) महिला उद्यमियों के लिए एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के भागीदारों को एक साथ लाता है।
- पीएम स्वनिधि योजना ने दिसंबर 2024 तक 5,939.7 करोड़ कार्यशील पूँजी ऋण के साथ 30.6 लाख महिला स्ट्रीट वेंडरों का समर्थन किया।
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY):** वित्त वर्ष 2023-24 में, 4.24 करोड़ महिला उद्यमियों को कुल 2.22 लाख करोड़ रुपये के ऋण वितरित किए गए।

Challenges faced by Women Business Borrowers

निष्कर्ष

- नीति आयोग ने इस बात पर बल दिया कि महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने से 150 से 170 मिलियन लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित हो सकते हैं, साथ ही कार्यबल में महिलाओं की अधिक भागीदारी को बढ़ावा मिल सकता है।
- ऋण, मार्गदर्शन और सहायता प्रणालियों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करके, भारत महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों की पूरी क्षमता को अनलॉक कर सकता है।

Source: AIR

उच्चतम न्यायालय ने न्यायाधिकरणों को मजबूत बनाने का आह्वान किया

संदर्भ

- उच्चतम न्यायालय ने न्यायाधिकरण सुधार अधिनियम, 2021 की समीक्षा करते हुए कर्मचारियों की नियुक्तियों, सेवा शर्तों और न्यायिक कार्यकाल से संबंधित मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए न्यायाधिकरण को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

न्यायाधिकरण क्या हैं?

- न्यायाधिकरण अर्ध-न्यायिक निकाय हैं जो विशेष क्षेत्रों में विवादों को हल करने के लिए स्थापित किए गए हैं, जिससे तेज़ और विशेषज्ञ निर्णय सुनिश्चित होते हैं। 42वें संशोधन अधिनियम (1976) ने संविधान में भाग XIV-A जोड़ा, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **अनुच्छेद 323A:** संसद को सार्वजनिक सेवा मामलों के लिए प्रशासनिक न्यायाधिकरण स्थापित करने की अनुमति देता है।
  - **अनुच्छेद 323B:** संसद एवं राज्य विधानसभाओं को कराधान, भूमि सुधार, उद्योग और चुनावों के लिए न्यायाधिकरण स्थापित करने का अधिकार देता है।

न्यायाधिकरणों को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दे

- **न्यायिक स्वतंत्रता का अभाव:** नियुक्तियों पर कार्यकारी नियंत्रण, छोटा कार्यकाल और हस्तक्षेप न्यायाधिकरणों की स्वायत्तता को कम करते हैं।
  - उदाहरण: उच्चतम न्यायालय ने ट्रिब्यूनल रिफॉर्म्स एक्ट, 2021 के कुछ प्रावधानों को रद्द कर दिया, जो चयन समितियों में न्यायिक प्रभुत्व को प्रतिबंधित करते थे।
- **केस बैकलॉग:** रिक्तियों और मामलों के धीमे निपटान के कारण भारी लंबित मामले।

- उदाहरण: सशस्त्र बल न्यायाधिकरण (AFT) में 18,829 मामले लंबित हैं (2021)।

- **स्टाफिंग और बुनियादी ढांचे की कमी:** मानव संसाधनों की कमी, अपर्याप्त सुविधाएँ और खराब सेवा शर्तें।
  - उदाहरण: अनुबंध के आधार पर NCLT कर्मचारियों की भर्ती ने संवेदनशील मामलों को संभालने में सुरक्षा और दक्षता पर चिंता व्यक्त की।
- **अतिव्यापी अधिकार क्षेत्र:** न्यायाधिकरण और नियमित न्यायालय प्रायः समान मामलों को संभालती हैं, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है।
  - **उदाहरण:** उच्चतम न्यायालय ने कॉरपोरेट कानून के मामलों में NCLT और उच्च न्यायालयों के बीच प्रायः टकराव देखा है।

आगे की राह

- **न्यायिक स्वतंत्रता को बढ़ाना:** यह सुनिश्चित करना कि न्यायाधिकरणों में नियुक्तियों में न्यायिक प्रभुत्व हो और उन्हें कार्यकारी हस्तक्षेप से सुरक्षा मिले।
- **राष्ट्रीय न्यायाधिकरण आयोग (NTC) की स्थापना:** न्यायाधिकरण प्रशासन, नियुक्तियों और कार्य स्थितियों की देखरेख करने के लिए एक केंद्रीकृत निकाय।
- **रिक्तियों को भरना और बुनियादी ढांचे का विकास:** नियुक्तियों में तेजी लाना और न्यायाधिकरण सदस्यों के लिए बेहतर सुविधाएँ प्रदान करना।
- **अधिकार क्षेत्र की स्पष्टता:** नियमित अदालतों के साथ टकराव से बचने के लिए न्यायाधिकरण मामलों के दायरे को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना।

Source: HT

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) की सफलता

संदर्भ

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने हाल ही में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के मिशन स्टीयरिंग ग्रुप (MSG) की नौवीं बैठक की अध्यक्षता की।

क्या आप जानते हैं?

- मिशन संचालन समूह NHM के अंतर्गत सर्वोच्च नीति-निर्माण और संचालन संस्था है, जो स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए व्यापक नीति निर्देश और शासन प्रदान करती है।
- MSG देश की स्वास्थ्य सेवा पहलों को आगे बढ़ाने वाली नीतियों और रणनीतियों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सभी योजनाओं एवं घटकों के लिए वित्तीय मानदंडों को मंजूरी देने के लिए पूरी तरह से सशक्त है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)

- राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) अप्रैल 2005 में सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे गरीब परिवारों को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रारंभ किया गया था।
- मई 2013 में, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) को एनआरएचएम के साथ एक उप-मिशन के रूप में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) को शामिल करते हुए कैबिनेट द्वारा अनुमोदित किया गया था।

NHM के अंतर्गत उपलब्धियां

- भारत ने मातृ मृत्यु दर (MMR) के राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति लक्ष्य को प्राप्त किया है, जो प्रति 1 लाख जीवित जन्मों पर 100 मृत्यु है, 1990 से 2020 तक MMR में 83% की गिरावट के साथ वैश्विक गिरावट दर को पार कर गया है।
- भारत में शिशु मृत्यु दर (IMR) में 69% की कमी और 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर में 75% की गिरावट देखी गई, दोनों ही वैश्विक औसत से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।
- कुल प्रजनन दर (TFR) 1992-93 में 3.4 से घटकर 2019-21 में 2.0 हो गई।
- 2004-05 में आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय 69.4% से घटकर 2021-22 में 39.4% हो गया, जबकि सरकारी स्वास्थ्य व्यय 22.5% से बढ़कर 48% हो गया।

- NHM के अंतर्गत स्वस्थ मानव संसाधनों की संख्या 2006-07 में 23,000 से बढ़कर 2023-24 में 5.23 लाख हो गई।

स्वास्थ्य उपलब्धियां

- **WHO प्रमाणन:** भारत ने 2015 में मातृ एवं नवजात टेटनस तथा 2024 में ट्रेकोमा को सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में समाप्त कर दिया है।
- **आयुष्मान आरोग्य मंदिर:** 1.76 लाख से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर चालू हैं, जिनमें आने वाले लोगों की संख्या और स्वास्थ्य सत्रों में वृद्धि हुई है।
- **स्क्रीनिंग और टेलीकंसल्टेशन:** गैर-संचारी रोगों (NCD) की स्क्रीनिंग 2019-20 में 10.94 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 109.55 करोड़ हो गई।
  - टेलीकंसल्टेशन 2019-20 में 0.26 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 11.83 करोड़ हो गया।
- **क्षय रोग (TB):** राष्ट्रीय TB उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत TB की घटनाओं में 18% की कमी और मृत्यु दर में 21% की कमी देखी गई।
- **राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम:** सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को कवर किया गया, 748 जिलों में 26.97 लाख रोगियों को सेवाएँ प्रदान की गईं।
- **सिकल सेल एनीमिया:** 5 करोड़ से ज़्यादा लोगों की जांच की गई, 1.84 लाख लोगों का निदान किया गया और 2.24 करोड़ सिकल सेल कार्ड वितरित किए गए।
- **मलेरिया और कालाजार:** भारत ने मलेरिया के मामलों में 79.3% की कमी और मलेरिया से होने वाली मृत्युओं में 85.2% की कमी हासिल की। कालाजार उन्मूलन का लक्ष्य 2023 में पूरा किया गया।

Source: PIB

भारत का कृषि निर्यात

संदर्भ

- भारत का कृषि निर्यात 6.5% बढ़कर अप्रैल-दिसंबर 2023 में 35.2 बिलियन डॉलर से अप्रैल-दिसंबर 2024 में 37.5 बिलियन डॉलर हो गया है।

भारत का कृषि अधिशेष कम होता जा रहा है

- भारत एक शुद्ध कृषि-वस्तु निर्यातक है, जिसके बाहरी शिपमेंट का मूल्य लगातार आयात से अधिक है।
- हालाँकि, व्यापार अधिशेष, जो 2013-14 में 27.7 बिलियन डॉलर के उच्चतम स्तर पर था, 2023-24 में घटकर 16 बिलियन डॉलर रह गया।

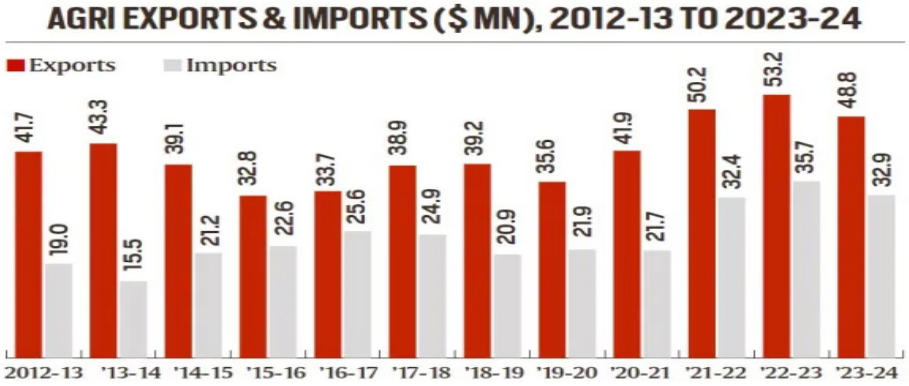

- संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) का खाद्य मूल्य सूचकांक (2014-16=100) 2013-14 और 2019-20 के बीच 119.1 से गिरकर 96.4 अंक पर आ गया।
- कम वैश्विक कीमतों ने भारत के कृषि निर्यात को कम लागत प्रतिस्पर्धी बना दिया और इसके किसानों को सस्ते आयात के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया।

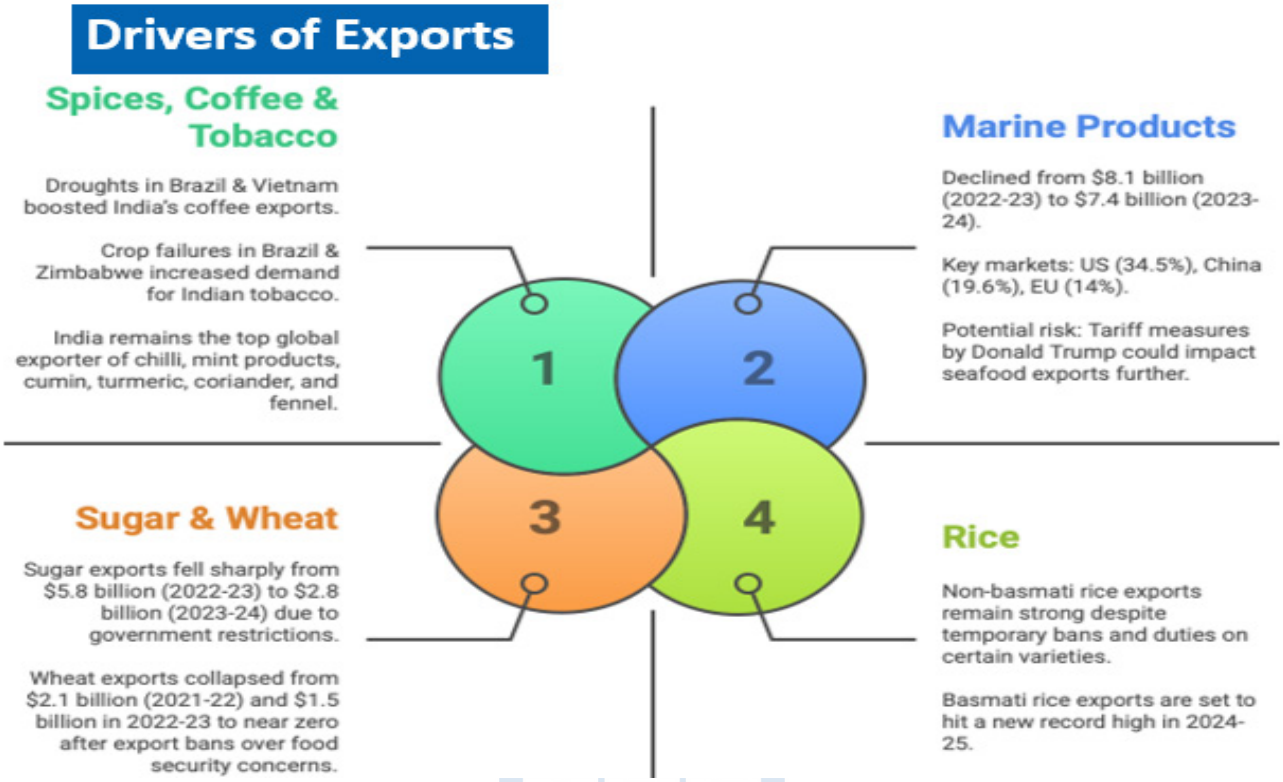

भारत का कृषि आयात

- **भारत के कृषि आयात में दो वस्तुओं का वर्चस्व है:** खाद्य तेल और दालें।
  - **दालें:** उच्च घरेलू उत्पादन के कारण आयात 2016-17 में $4.2 बिलियन से घटकर औसतन $1.7 बिलियन (2018-23) रह गया, लेकिन खराब फसल के कारण 2023-24 में यह बढ़कर $5 बिलियन से अधिक हो गया।
  - **खाद्य तेल**: 2024-25 में व्यय 2021-22 ($19 बिलियन) और 2022-23 ($20.8 बिलियन) के पश्चात् सबसे अधिक होने वाला है, जब यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक कीमतों को बढ़ा दिया था।
  - **कपास:** कभी प्रमुख निर्यातक रहा भारत 2024 में शुद्ध आयातक बन गया। निर्यात ($575.7 मिलियन) में 8.1% (अप्रैल-दिसंबर) की गिरावट आई, जबकि आयात ($918.7 मिलियन) में 84.2% की वृद्धि हुई।

TOP IMPORTS ($ MN)

	2022-23	2023-24	Apr-Dec 2023	Apr-Dec 2024
Vegetable oils	20,837.7	14,871.66	11,638.03	13,518.96
Pulses	1,943.89	3,746.78	2,467.93	3,789.75
Fresh fruits	2,483.95	2,734.97	2,032.64	2,230.2
Cashew	1,805.67	1,431.39	1,193.04	1,414.36
Spices	1,336.65	1,455.57	1,123.81	1,220.61
Raw cotton	1,438.69	598.66	498.81	918.69
Natural rubber	937.6	739.18	554.15	875.7
TOTAL	35,686.2	32,870.03	24,641.45	29,251.41

Source: Department of Commerce

भारत में कृषि अधिशेष कम होने के कारण

- **व्यापार और निर्यात नीतियाँ:** निरंतर प्रतिबंधों (जैसे चावल और चीनी निर्यात पर प्रतिबंध) ने वैश्विक बाजारों में भारत की विश्वसनीयता को प्रभावित किया है, जिससे कृषि निर्यात में गिरावट आई है।
- **आपूर्ति शृंखला व्यवधान:** कोविड-19 महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक व्यापार को बाधित किया, जिससे भारतीय कृषि उत्पादों की आपूर्ति और माँग दोनों प्रभावित हुई।

- उच्च इनपुट लागत (उर्वरक, ईंधन, रसद) ने भारतीय निर्यातकों के लाभ मार्जिन को कम कर दिया है।
- **जलवायु परिवर्तनशीलता:** दलहन अक्सर वर्षा आधारित क्षेत्रों में उगाए जाते हैं, जहाँ वे जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, जिससे उपज में उतार-चढ़ाव और कम उत्पादन होता है।
  - एल नीनो के कारण मानसून और सर्दियों में बारिश कम हुई, जिसके कारण 2023-24 में घरेलू दलहन उत्पादन में गिरावट आई।

आगे की राह

- **निर्यात बाज़ारों में विविधता लाना:** समुद्री उत्पादों और अन्य निर्यातों के लिए नए गंतव्यों की खोज करके अमेरिका एवं चीन जैसे प्रमुख बाज़ारों पर निर्भरता कम करना।
- **जलवायु लचीलापन बनाना:** खराब फ़सल एवं आयात में उतार-चढ़ाव की संवेदनशीलता को कम करने के लिए सिंचाई के बुनियादी ढाँचे और जलवायु-प्रतिरोधी खेती को मज़बूत करना।
- **निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता:** उत्पादकता में सुधार और उत्पादन लागत को कम करने के लिए कृषि अनुसंधान एवं विकास में निवेश करना।
  - निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए मूल्य-वर्धित प्रसंस्करण को मज़बूत करना।
- **व्यापार नीतियाँ:** भारतीय कृषि उत्पादों के लिए बेहतर बाज़ार पहुँच सुनिश्चित करने के लिए व्यापार समझौतों का लाभ उठाना।

Source: IE

IMF ने NBFC से जुड़ी चिंताएँ व्यक्त की

संदर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) के विद्युत और बुनियादी ढाँचा क्षेत्र में केंद्रित निवेश के कारण भारत में संभावित वित्तीय अस्थिरता के बारे में चिंता व्यक्त की है।

प्रमुख विशेषताएँ

- "भारत वित्तीय प्रणाली स्थिरता आकलन" शीर्षक वाली IMF रिपोर्ट विद्युत क्षेत्र के ऋणों पर केंद्रित है।
- IMF ने संभावित मुद्रास्फीति परिदृश्य में बैंकों की लोचशीलता का अध्ययन किया, जहाँ विकास मंद हो जाता है और मुद्रास्फीति बढ़ जाती है।
- वित्त वर्ष 2019 से वित्तपोषण के लिए बैंक उधार पर निर्भरता बढ़ी है।
- वित्त वर्ष 2024 में, विद्युत क्षेत्र के ऋणों का 63% शीर्ष तीन अवसंरचना वित्तपोषण कंपनियों (IFC) से था, जो NBFC का एक प्रकार है।
- यह हिस्सा 2019-20 में 55% से बढ़ा है।
- **चिंताएँ:** यह NBFC के विद्युत और अवसंरचना क्षेत्रों में उच्च जोखिम के कारण भारत में वित्तीय अस्थिरता के बारे में चिंताएँ बढ़ाता है।
  - संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करने वाले विद्युत क्षेत्र में उच्च जोखिम वित्तीय अस्थिरता के जोखिम को बढ़ाता है।
  - NBFC बैंकों, कॉरपोरेट बॉन्ड बाज़ारों और म्यूचुअल फ़ंड से जुड़े हुए हैं, जो कमज़ोरियों के उत्पन्न होने पर तनाव को बढ़ा सकते हैं।
  - तनाव परीक्षणों से पता चला है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (PSB) मुद्रास्फीति के दौरान 9% की पूँजी पर्याप्तता अनुपात (CAR) बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकते हैं।
  - RBI ने PSB के लिए 12% और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के लिए 9% का CAR अनिवार्य किया है।
- **विनियामक चिंताएँ:** राज्य के स्वामित्व वाली NBFC को बड़ी जोखिम सीमा से छूट दी गई है, जिससे विनियामक चिंताएँ बढ़ रही हैं।
- **सिफारिशें:**
  - NBFC के लिए तरलता विनियमन को मजबूत करना, विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे वाले।

- वित्तीय व्यवधानों को रोकने के लिए NBFC के ऋण पैटर्न की गहन निगरानी और बेहतर जोखिम प्रबंधन ढाँचे।
- निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए राज्य के स्वामित्व वाली NBFC को निजी NBFC के समान ही विनियामक मानकों का सामना करना चाहिए।
- NBFC ऋण और जोखिम पर बेहतर डेटा साझा करने की आवश्यकता पर बल दिया।
- बैंकों के लिए विकासात्मक उद्देश्यों पर वित्तीय स्थिरता को प्राथमिकता देना।

गैर-बैंकिंग वित्तीय निगम (NBFC) क्या हैं?

- **परिभाषा:** कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत पंजीकृत एक कंपनी, जो ऋण, अग्रिम और सरकार या स्थानीय अधिकारियों द्वारा जारी किए गए शेयरों/स्टॉक/बांड/डिबेंचर/प्रतिभूतियों या अन्य विपणन योग्य प्रतिभूतियों के अधिग्रहण में लगी हुई है।
- **बहिष्करण:** इसमें मुख्य रूप से शामिल संस्थान शामिल नहीं हैं: कृषि गतिविधियाँ; औद्योगिक गतिविधियाँ; माल की बिक्री/खरीद (प्रतिभूतियों को छोड़कर); सेवाओं का प्रावधान; अचल संपत्ति की बिक्री/खरीद/निर्माण।
- **अवशिष्ट गैर-बैंकिंग कंपनी:** एक कंपनी जिसका मुख्य व्यवसाय किसी योजना या व्यवस्था (एकमुश्त या किश्तों) के अंतर्गत जमा प्राप्त करना है, उसे भी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- **NBFC के मुख्य कार्य:** व्यक्तियों और व्यवसायों को वित्तीय उत्पाद प्रदान करना।
  - बुनियादी ढाँचे और विकास परियोजनाओं को निधि देना।
  - प्रतिभूतियों में निवेश की पेशकश करना।
- **नियामक निरीक्षण:** NBFC के कार्यों का प्रबंधन कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) दोनों द्वारा किया जाता है।

बैंकों और NBFC के बीच क्या अंतर है?

- NBFCs उधार देते हैं और निवेश करते हैं और इसलिए उनकी गतिविधियाँ बैंकों के समान होती हैं; हालाँकि नीचे दिए गए अनुसार कुछ अंतर हैं:
  - NBFCs माँग जमा स्वीकार नहीं कर सकते हैं;
  - NBFCs भुगतान और निपटान प्रणाली का हिस्सा नहीं हैं और स्वयं पर आहरित चेक जारी नहीं कर सकते हैं;
  - बैंकों के मामले के विपरीत, जमा बीमा और ऋण गारंटी निगम की जमा बीमा सुविधा NBFCs के जमाकर्त्ताओं के लिए उपलब्ध नहीं है।

Source: TH

भारत का AI सुरक्षा संस्थान डिजाइन करना

समाचार में

- केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की कि भारत सुरक्षित और विश्वसनीय AI विकास सुनिश्चित करने के लिए इंडियाएआई मिशन के अंतर्गत एक स्वदेशी AI मॉडल लॉन्च करेगा और एक AI सुरक्षा संस्थान (AISI) की स्थापना करेगा।

वैश्विक परिदृश्य

- यू.के., यू.एस., सिंगापुर और जापान जैसे देशों ने वैश्विक सहयोग और तकनीकी समझ पर ध्यान केंद्रित करते हुए एआई जोखिमों को संबोधित करने के लिए एआई सुरक्षा संस्थान (AISIs) स्थापित किए हैं।
  - यू.के. के AISIs ने एआई मॉडल के मूल्यांकन के लिए ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म 'इंस्पेक्ट' लॉन्च किया।
  - यू.एस. के AISIs ने राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक सुरक्षा से संबंधित AI जोखिमों को संबोधित करने के लिए एक अंतर-विभागीय टास्कफोर्स का गठन किया।
  - सिंगापुर का AISIs सुरक्षित मॉडल डिजाइन और कठोर परीक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है।

भारत का AI सुरक्षा संस्थान

- AISI सुरक्षित और विश्वसनीय स्तंभ के अंतर्गत कार्य करेगा और AI जोखिमों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।
- भारत का AISI भारत की सामाजिक-आर्थिक, भाषाई और तकनीकी चुनौतियों का समाधान करने के लिए शिक्षाविदों, स्टार्टअप्स, उद्योग एवं सरकार के साथ सहयोग करेगा।
- भारत का AISI स्वदेशी उपकरण और ढाँचे विकसित करेगा जो वैश्विक AI सुरक्षा नेटवर्क के साथ अंतर-संचालन सुनिश्चित करते हुए जिम्मेदार AI को प्राथमिकता देते हैं।
- MeitY और UNESCO के साथ भारत का सहयोग AI नैतिकता और विकास में अंतराल की पहचान करने में सहायता करेगा।

सहायता

- यू.के. एआई सुरक्षा शिखर सम्मेलन से ब्लेचली घोषणा साइबर सुरक्षा और गलत सूचना जैसे वैश्विक खतरों पर प्रकाश डालती है।
- कार्या की तरह भारत का जीवंत स्टार्टअप इकोसिस्टम समावेशिता के लिए गैर-प्रतिनिधि डेटा और बहुभाषी एआई विकास जैसे मुद्दों से निपट रहा है।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कम कौशल और कम मूल्य वर्धित सेवाओं में भारत का कार्यबल एआई व्यवधानों के प्रति संवेदनशील बना हुआ है।
    - इसने श्रमिकों को मध्यम और उच्च कौशल वाली रोजगारों में जाने में सहायता करने के लिए "मजबूत संस्थान" बनाने की सिफारिश की, जहाँ एआई उनकी जगह लेने के बजाय उन्हें बढ़ा सकता है।

महत्त्व

- भारत का एआई सुरक्षा संस्थान स्थानीय चिंताओं, जैसे कि पूर्वाग्रह, भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार, लैंगिक जोखिम और व्यक्तिगत गोपनीयता को बढ़ावा दे सकता है।
- यह एआई जोखिमों, न्यूनीकरण, रेड-टीमिंग और मानकीकरण पर वैश्विक चर्चाओं को प्रभावित कर सकता है।
- हितधारकों के बीच सुसंगत समझ और संचार के लिए एक मानकीकृत एआई सुरक्षा वर्गीकरण बनाने में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
- भारत G20 और एआई पर वैश्विक भागीदारी (GPAI) में अपने नेतृत्व का निर्माण करते हुए एआई शासन में वैश्विक बहुमत के लिए एक एकीकृत आवाज के रूप में स्वयं को स्थापित कर सकता है।

सुझाव और आगे की राह

- भारत के AISI को अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाते हुए उन्हें भारत के संदर्भ में ढालते हुए स्थानीय प्रासंगिकता और वैश्विक संरेखण के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है।
- भारत के AISI को AI मॉडल और उनके संभावित प्रभावों के बारे में जानकारी साझा करने के लिए एक वैश्विक ढाँचा बनाने में सहायता करनी चाहिए, जिससे पारदर्शिता को बढ़ावा मिले।
- भारत स्थानीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए AI सुरक्षा ढाँचे और मूल्यांकन मेट्रिक्स का सह-विकास करके वैश्विक दक्षिण में AI सुरक्षा प्रयासों का नेतृत्व कर सकता है।

क्या आप जानते हैं?

- भारत के AI में वैश्विक नेतृत्व को बढ़ाने और समाज के सभी क्षेत्रों तक इसके लाभों को पहुँचाने के लिए 7 मार्च, 2024 को IndiaAI मिशन प्रारंभ किया गया था।
- मिशन ने भारत के AI पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए 7 प्रमुख स्तंभ पेश किए हैं।
- यह स्वदेशी तकनीकी उपकरण, दिशा-निर्देश, रूपरेखा एवं मानक विकसित करने पर जोर देता है जो भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई और आर्थिक विविधता सहित भारत की अद्वितीय चुनौतियों तथा अवसरों को संबोधित करते हैं।

Source :TH

संक्षिप्त समाचार

अरबी गोंद (बबूल गम)

समाचार में

- युद्धग्रस्त सूडान से अरबी गोंद (अकेसिया गम) की तस्करी वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं को बाधित कर रही है।
  - सूडान दुनिया की 80% आपूर्ति का उत्पादन करता है, उसके बाद चाड, नाइजीरिया और अन्य सहेलियन राष्ट्र हैं।

अरबी गोंद (बबूल गोंद) के बारे में

- यह बबूल के पेड़ों से प्राप्त एक प्राकृतिक स्राव है, मुख्य रूप से बबूल सेनेगल और बबूल सेयाल। यह एक जटिल पॉलीसैकराइड है जिसमें उत्कृष्ट पायसीकारी, स्थिरीकरण और गाढ़ा करने वाले गुण होते हैं।
- **उपयोग:**
  - **खाद्य उद्योग:** शीतल पेय, तैयार माल और कन्फेक्शनरी में एक पायसीकारी, स्थिरीकरण एवं गाढ़ा करने वाले के रूप में कार्य करता है।
  - **सौंदर्य प्रसाधन:** बनावट और स्थिरता के लिए स्किनकेयर उत्पादों और लिपस्टिक में उपयोग किया जाता है।
  - **फार्मास्यूटिकल्स:** सिरप, कैप्सूल और टैबलेट कोटिंग्स में पाया जाता है।

Source: TH

वालेस लाइन

संदर्भ

- वालेस रेखा जैवभूगोल में एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जो महाद्वीपों में प्रजातियों के वितरण में उल्लेखनीय अंतरों की व्याख्या करती है।

वालेस लाइन क्या है?

- वालेस रेखा, जिसे प्रथम बार 19वीं सदी के अंत में ब्रिटिश प्रकृतिवादी अल्फ्रेड रसेल वालेस ने पहचाना था, एक काल्पनिक सीमा है जो एशिया और वालेसिया (एशिया और ऑस्ट्रेलिया के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र) के अलग-अलग जैव-भौगोलिक क्षेत्रों को पृथक् करती है।
- रेखा के पश्चिमी किनारे पर, प्रजातियाँ मुख्य रूप से एशियाई मूल की हैं, जबकि पूर्वी किनारे पर, प्रजातियाँ एशियाई और ऑस्ट्रेलियाई दोनों मूल की विशेषताएँ प्रदर्शित करती हैं।
  - इन क्षेत्रों के बीच अपेक्षाकृत कम दूरी (35 किलोमीटर) होने के बावजूद जीवों में यह तीव्र अंतर पाया जाता है।

वालेस लाइन का भौगोलिक विस्तार

- यह बाली और लोम्बोक के बीच लोम्बोक जलडमरूमध्य से होकर गुजरती है।
- यह बोर्नियो और सुलावेसी के बीच मकास्सर जलडमरूमध्य से होकर गुजरती है।
- यह मिंडानाओ द्वीप के दक्षिण में पूर्व की ओर, फिलीपीन सागर में फैली हुई है।

सुलावेसी द्वीप पर निष्कर्ष

- 1876 में, यह देखा गया कि इस द्वीप का अफ्रीका, भारत, जावा, मालुकु द्वीप, न्यू गिनी और फिलीपींस से संबंध है।
- इसके अतिरिक्त, यहाँ एशिया और ऑस्ट्रेलिया दोनों की प्रजातियों का एक अद्वितीय मिश्रण है।
- **सुलावेसी के अनोखे जीवों के उदाहरण**
  - **एशियाई प्रजातियाँ:** टार्सियर्स (परिवार टार्सिडी), लोलैंड एनोआ (बुबलस डिप्रेसिकॉर्निस) और माउंटेन एनोआ (बुबलस क्वार्लेसी)।
  - **ऑस्ट्रेलियाई प्रजातियाँ:** बौना कस्कस (स्ट्रिगोकसस सेलेबेंसिस)।

Source: TH

थोरियम भंडार

संदर्भ

- चीन के भूवैज्ञानिकों को मंगोलिया क्षेत्र में दस लाख टन थोरियम मिला है।

थोरियम की क्षमता

- थोरियम यूरेनियम की तुलना में 200 गुना अधिक ऊर्जा उत्पन्न करता है और यह अधिक सुरक्षित है, क्योंकि इसमें पिघलने का कोई जोखिम नहीं है, जल से शीत करने की आवश्यकता नहीं है और रेडियोधर्मी अपशिष्ट न्यूनतम है।
- थोरियम पिघले-नमक रिएक्टर (TMSR) को वैश्विक ऊर्जा उत्पादन के लिए एक गेम-चेंजर के रूप में देखा जाता है।

चीन की ऊर्जा परियोजनाएँ

- चीन ने विश्व के पहले TMSR विद्युत संयंत्र को मंजूरी दे दी है, जो 2029 तक 10 मेगावाट बिजली पैदा करेगा।
- देश भविष्य के चंद्रमा ठिकानों के लिए थोरियम-संचालित जहाजों और चंद्र रिएक्टरों की खोज कर रहा है।

भारत के थोरियम भंडार

- भारत के पास विश्व में थोरियम का सबसे बड़ा भंडार है।
- केरल, ओडिशा, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में थोरियम के बड़े भंडार पाए जाते हैं।
  - केरल और ओडिशा दोनों मिलकर भारत के कुल थोरियम का 70% से अधिक भंडार रखते हैं।
- भारत तीन चरणों वाला परमाणु कार्यक्रम विकसित कर रहा है, जिसमें थोरियम आधारित रिएक्टर तीसरे चरण का अहम हिस्सा हैं।
- **चुनौतियाँ:** अयस्कों से थोरियम निकालने के लिए बहुत ज़्यादा ऊर्जा की आवश्यकता होती है और इससे काफ़ी मात्रा में अपशिष्ट निकलता है।
- हालाँकि भारत में थोरियम के बड़े भंडार हैं, लेकिन परमाणु ऊर्जा के उपयोग के लिए इसे निकालने में कई चुनौतियाँ हैं, जिनमें उन्नत रिएक्टर तकनीक और आर्थिक व्यवहार्यता की आवश्यकता शामिल है।

Source: BT

रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (RERA)

समाचार में

- सर्वोच्च न्यायालय ने रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (RERA) की कार्यप्रणाली पर निराशा व्यक्त करते हुए इसे "पूर्व नौकरशाहों के पुनर्वास केंद्र" के रूप में वर्णित किया।

परिचय

- भूमि और उपनिवेशीकरण राज्य का विषय है, लेकिन घर खरीदने वालों की सुरक्षा और रियल एस्टेट क्षेत्र में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए, संसद ने रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 (RERA) अधिनियमित किया।
- यह भारत के रियल एस्टेट क्षेत्र में सुधार के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक कानून है।
- इसने रियल एस्टेट क्षेत्र के विनियमन और संवर्धन के लिए रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण की स्थापना की।

RERA के प्रमुख प्रावधान

- **विनियामक प्राधिकरणों की स्थापना:**
  - **राज्य रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (RERA)**
    - रियल एस्टेट परियोजनाओं को पंजीकृत करता है और एक सार्वजनिक डेटाबेस बनाए रखता है।
    - खरीदारों, प्रमोटरों और एजेंटों के हितों की रक्षा करता है।
    - नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।
    - किफायती और सतत आवास को बढ़ावा देता है।
  - **रियल एस्टेट अपीलीय न्यायाधिकरण**
    - RERA के निर्णयों के खिलाफ अपील संभालता है।
    - विवादों का त्वरित समाधान सुनिश्चित करता है।
- **वित्तीय सुरक्षा:**
  - **एस्क्रो खाता अनिवार्य:**
    - खरीदारों के 70% फंड को एस्क्रो खाते में जमा किया जाना चाहिए, जिसका उपयोग केवल निर्माण के लिए किया जाना चाहिए।

- **अग्रिम भुगतान सीमा:**
  - डेवलपर्स लिखित समझौते के बिना कुल लागत का 10% से अधिक अग्रिम के रूप में नहीं ले सकते।
- **घर खरीदने वालों के लिए सुरक्षा:**
  - **परिभाषित कारपेट एरिया:**
    - खरीदारों से शुद्ध उपयोग योग्य फ्लोर एरिया के आधार पर शुल्क लिया जाएगा, न कि सुपर बिल्ट-अप एरिया के आधार पर।
  - **समय पर प्रोजेक्ट पूरा करना:**
    - डेवलपर्स को समय पर प्रोजेक्ट पूरा करना होगा, ऐसा न करने पर जुर्माना लगाया जाएगा।
  - **संरचनात्मक दोष दायित्व:**
    - डेवलपर्स को किसी भी संरचनात्मक दोष को ठीक करने के लिए पाँच वर्ष तक उत्तरदायी होना चाहिए।
- **दंडात्मक प्रावधान और कानूनी अनुपालन:**
  - डेवलपर्स और खरीदारों दोनों की ओर से देरी के लिए समान दंडात्मक ब्याज।
  - **कारावास:**
    - RERA प्रावधानों का उल्लंघन करने वाले डेवलपर्स के लिए 3 वर्ष तक की सजा।
    - ट्रिब्यूनल के आदेशों का पालन न करने पर एजेंटों और खरीदारों के लिए 1 वर्ष तक की सजा।

Source: TH

भारत में अनुसंधान एवं विकास पर व्यय में वृद्धि

संदर्भ

- भारत का अनुसंधान एवं विकास पर सकल व्यय (GERD) विगत दशक में दोगुने से अधिक हो गया है, जो 2013-14 में ₹60,196 करोड़ से बढ़कर ₹1,27,381 करोड़ हो गया।

दिशा कार्यक्रम: तकनीकी विकास का चालक

- दिशा कार्यक्रम, नवाचारों को विकसित करने, सफल उपयोग और अपनाने के उद्देश्य से एक पहल है, जो ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा में एक कदम है, जहाँ अनुसंधान-संचालित समाधान उद्योगों को बदल देते हैं।
  - यह कार्यक्रम विभिन्न विषयों में विघटनकारी प्रौद्योगिकियों पर कार्य करने वाले संकाय सदस्यों और छात्रों का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भारत वैश्विक नवाचार में सबसे आगे रहे।
- अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF), विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान को जोड़ते हुए एक एकीकृत अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का प्रयास करता है।

अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए अन्य सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF):** इसका उद्देश्य अनुसंधान के लिए वित्तपोषण और शिक्षा जगत तथा उद्योग के बीच सहयोग को बढ़ाना है।
- **अटल इनोवेशन मिशन (AIM):** छात्रों एवं पेशेवरों के बीच स्टार्टअप, उद्यमशीलता और नवाचार को प्रोत्साहित करता है।
- **उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना:** अनुसंधान एवं विकास-संचालित उद्योगों के लिए प्रोत्साहन के माध्यम से उच्च तकनीक विनिर्माण का समर्थन करती है।
- **स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया:** ये पहल स्टार्टअप के लिए वित्तपोषण और नीतिगत सहायता प्रदान करके नवाचार को बढ़ावा देती हैं।

भारत के अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र में चुनौतियाँ

- **निजी क्षेत्र की भागीदारी:** निजी क्षेत्र GERD में केवल 36% का योगदान देता है, जबकि विकसित देशों में यह 60-70% से अधिक है।

- **अपर्याप्त वित्तपोषण:** विकास के बावजूद, GDP के प्रतिशत के रूप में भारत का GERD (~ 0.7%) चीन (2.4%) और अमेरिका (3.1%) जैसे देशों की तुलना में कम है।
- **सीमित विश्वविद्यालय-उद्योग सहयोग:** शिक्षा और उद्योग के बीच कमजोर संबंध अनुसंधान के व्यावसायीकरण में बाधा डालते हैं।

Source: AIR

सौर अधिकतम

संदर्भ

- नासा ने सूर्य के चक्र के सौर अधिकतम चरण के साथ संरेखित करते हुए, कोरोना और हीलियोस्फीयर को एकीकृत करने के लिए पोलारिमीटर (PUNCH) मिशन लॉन्च किया है।

सौर चक्र क्या है?

- सूर्य, एक चुंबक की तरह, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों वाला एक चुंबकीय क्षेत्र रखता है।
- यह चुंबकीय क्षेत्र सूर्य के अन्दर विद्युत आवेशित कणों की गति से उत्पन्न होता है।
- लगभग प्रत्येक 11 वर्ष में, सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है, जिससे उसके उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव बदल जाते हैं - एक घटना जिसे सौर चक्र के रूप में जाना जाता है।

सौर अधिकतम (Solar Maximum)

- सौर अधिकतम सूर्य के 11 वर्षीय चक्र का चरम चरण है, जिसकी विशेषता उच्च सौर गतिविधि है।
- इस अवधि के दौरान, सूर्य अधिक ऊर्जा, विकिरण एवं प्रकाश उत्सर्जित करता है और सूर्य के धब्बों की संख्या में वृद्धि का अनुभव करता है।
  - यह परिवर्तन तब होता है जब सूर्य का चुंबकीय क्षेत्र पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है।
- **अवधि:** सौर अधिकतम एक से दो वर्ष के बीच रहता है। दो सौर अधिकतम के बीच का समय 9 से 13 वर्ष तक भिन्न हो सकता है।

पृथ्वी पर सौर अधिकतम का प्रभाव

- **सौर ज्वालाएँ और कोरोनल मास इजेक्शन (CMEs):** चुंबकीय ऊर्जा के निकलने से बड़े पैमाने पर सौर तूफान आते हैं जो अंतरिक्ष में विकिरण और कणों के विस्फोट भेजते हैं।
- **पावर ग्रिड को हानि:** तीव्र भू-चुंबकीय तूफान विद्युत अवसंरचना को बाधित कर सकते हैं, जिससे विद्युत् की आपूर्ति बाधित हो सकती है।
- **सैटेलाइट की खराबी:** सौर विकिरण में वृद्धि से सैटेलाइट संचालन प्रभावित होता है, जिससे संभावित रूप से संचार और नेविगेशन विफलताएँ हो सकती हैं।

पंच(PUNCH) मिशन

- PUNCH एक नासा स्मॉल एक्सप्लोरर (SMEX) मिशन है, जो यह बेहतर ढंग से समझने के लिए है कि सूर्य के कोरोना का द्रव्यमान और ऊर्जा किस तरह सौर मंडल को भरने वाली सौर हवा बन जाती है।
- मिशन में सूर्य-समकालिक, निम्न पृथ्वी कक्षा में चार छोटे उपग्रहों का एक समूह शामिल है, जो एक साथ सौर कोरोना की गहरी-क्षेत्र, निरंतर, 3D छवियाँ तैयार करेंगे।

Source: IE

अपतटीय खनन(Offshore Mining)

संदर्भ

- केरल विधानसभा ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें केरल तट पर अपतटीय खनन की अनुमति देने की केंद्र सरकार की योजना का विरोध किया गया।

परिचय

- **2023 संशोधन:** अपतटीय क्षेत्र खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 2002 में संशोधन, केंद्रीय खान मंत्रालय को गहरे समुद्र में खनिज ब्लॉकों की नीलामी करने की अनुमति देता है।

अपतटीय खनन

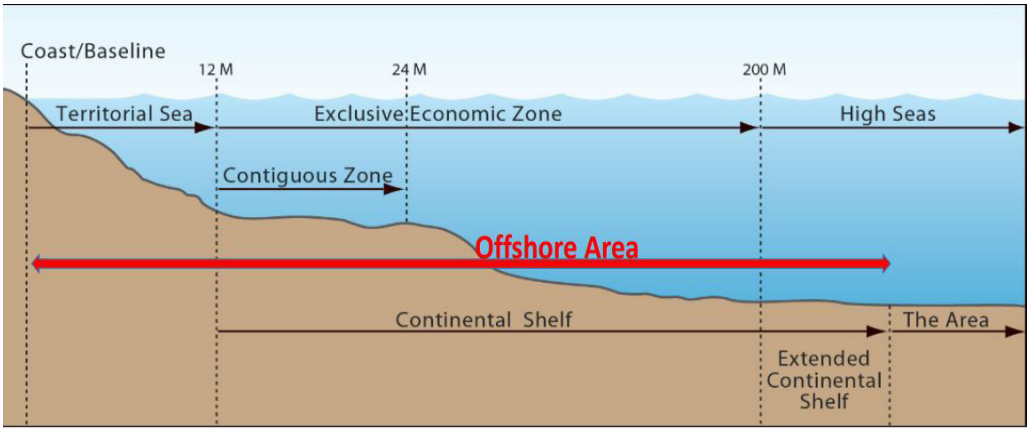

- अपतटीय खनन गहरे समुद्र तल से 200 मीटर से अधिक की गहराई पर खनिज जमा को पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया है।
- **संसाधनों के प्रकार:**
  - **तेल और गैस:** अपतटीय तेल रिग या प्लेटफार्मों से निकाले गए।
  - **खनिज:** इसमें कीमती धातुएँ, पॉलीमेटेलिक नोड्यूल और समुद्र तल पर या उसके नीचे पाए जाने वाले अन्य दुर्लभ खनिज शामिल हैं।
  - **रेत और बजरी:** निर्माण और अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

चिंताएँ

- **आवासों का विघटन:** खनन रोबोट समुद्र तल को नष्ट कर देते हैं, जिससे 5,000 से अधिक प्रजातियों और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को हानि पहुँचती है।
- **अवसाद के बादल:** अवसाद के बादल समुद्री जीवन को दमित कर देते हैं, भोजन को बाधित करते हैं और जल की गुणवत्ता को कम करते हैं।
- **तकनीकी चुनौतियाँ:** गहरे समुद्र में खनन तकनीक अविकसित है; अत्यधिक दबाव के कारण उपकरणों की मरम्मत करना मुश्किल है।
- **नैतिक विचार:** कंपनियाँ (SAP, BMW, Google, आदि) पर्यावरण संबंधी चिंताओं का उदाहरण देते हुए समुद्र तल की सामग्री का उपयोग करने का विरोध करती हैं।

संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून सम्मेलन (UNCLOS)

- UNCLOS को 1982 में अपनाया गया था और यह 1994 में लागू हुआ।
- यह विश्व के महासागरों और समुद्रों में कानून एवं व्यवस्था की एक व्यापक व्यवस्था स्थापित करता है, जो महासागरों तथा उनके संसाधनों के सभी उपयोगों को नियंत्रित करने वाले नियम स्थापित करता है। य
- राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे महासागर तल पर खनन और संबंधित गतिविधियों को विनियमित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तल प्राधिकरण की स्थापना करता है।

अंतर्राष्ट्रीय समुद्रतल प्राधिकरण (ISA)

- अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तल प्राधिकरण (ISA) एक स्वायत्त अंतर्राष्ट्रीय संगठन है
  - जिसकी स्थापना 1982 के संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून सम्मेलन (UNCLOS) और
  - 1994 के समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के भाग XI के कार्यान्वयन से संबंधित समझौते के अंतर्गत की गई है।
- UNCLOS के सभी राज्य पक्ष ISA के सदस्य हैं।
- मई 2023 तक, ISA के 169 सदस्य हैं (भारत भी इसका सदस्य है), जिसमें 168 सदस्य देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं।
- **मुख्यालय:** किंग्स्टन, जमैका

Source: TH

वनतारा(Vantara)

समाचार में

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वनतारा का उद्घाटन किया।

वनतारा

- यह जामनगर, गुजरात में एक अद्वितीय वन्यजीव संरक्षण, बचाव और पुनर्वास पहल है।
- यह विश्व का सबसे बड़ा वन्यजीव पुनर्वास केंद्र है।
- यह 1.5 लाख से अधिक बचाए गए, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त जानवरों का आवास स्थल है, जो उन्हें घर से दूर एक घर और जीवन का दूसरा मौका प्रदान करता है।
- **पुरस्कार और मान्यता:** केंद्र सरकार ने हाथियों के बचाव, उपचार और देखभाल के लिए राधे कृष्ण मंदिर हाथी कल्याण ट्रस्ट (RKTEWT) के असाधारण योगदान को मान्यता देते हुए वंतारा को 'कॉर्पोरेट' श्रेणी के अंतर्गत प्रतिष्ठित 'प्राणी मित्र' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।

Source :TH

■■■■